नए नियम में राज्य और वाचा

अध्याय 2

परमेश्वर का राज्य

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय...1
शुभ-सन्देश...1
अर्थ...2
परमेश्वर का राज्य...3
अटल सम्प्रभुता...4
खुलता हुआ राज्य...5
विकसित होती हुई विशेषता...6
इस्राएल की विफलताएँ...6
इस्राएल की आशाएँ...7
आगमन...9
अपेक्षाएँ...10
त्रि-स्तरीय विजय...13
पराजय...14
छुटकारा...18
उपसंहार...20

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परिचय

जब कभी भी आप एक जटिल कहानी को पढ़ते हैं तो आप आसानी से उसके विवरण में खो जाते हैं। परन्तु इस समस्या से बचने का एक तरीका कहानी के अत्यन्त महत्वपूर्ण हिस्सों को पहचान लिया जाए और फिर इसका बारी बारी से उल्लेख किया जाए। मुख्य तत्व को ध्यान में रखते हुए, हम यह देख सकते हैं कि ये विवरण कैसे एक साथ सही आकार में आ जाते हैं। कई अर्थों में, इसी तरह की बात उस समय सत्य हो जाती है जब नए नियम के धर्मविज्ञान को समझने की बात आती है। जब हम पवित्रशास्त्र का गहन अध्ययन करना आरम्भ करते हैं, तब हमें बहुत सारे विवरणों का पता चलता है जिन्हें हम आसानी से खो देते हैं। इसलिए, हमें नए नियम के मुख्य विचारों के प्रति सावधान रहने की आवश्यकता है और उनका बारी बारी से उल्लेख करना चाहिए।

यह नए नियम में राज्य और वाचा की हमारी श्रृंखला के पर हमारा दूसरा अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक "परमेश्वर का राज्य" नाम से दिया। इस अध्याय में, हम नए नियम की सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण शिक्षाओं में से एक: परमेश्वर का राज्य की ओर इंगित करेंगे।

जैसा कि हम देखेंगे, कि परमेश्वर का राज्य विषय नए नियम में इतना ज़्यादा महत्वपूर्ण है जिसके कारण उचित रीति से नए नियम के धर्मविज्ञान को राज्य का धर्मविज्ञान समझा गया है। दूसरे शब्दों में, वह सब कुछ जिसे नए नियम के लेखकों ने लिखा, कुछ सीमा तक, परमेश्वर के राज्य का विवरण देने और उसके विकास करने के बारे में समर्पित है।

हम नए नियम के धर्मविज्ञान में परमेश्वर के राज्य की प्रमुखता का दो तरह के दृष्टिकोणों से पता लगाएंगे। सर्वप्रथम, हम उस बात को देखेंगे जिसे नए नियम के लेखकों ने राज्य का शुभ सन्देश, या सुसमाचार कह कर पुकारा है। और दूसरा, हम यह उल्लेख करेंगे कि कैसे वह सब जिसे उन्होंने लिखा उसे राज्य के आगमन ने प्रभावित किया। ये दो विषय हमें यह देखने में सहायता करेंगे कि परमेश्वर के राज्य का धर्मसिद्धान्त नए नियम के प्रत्येक आयाम की कैसे पुष्टि करता है। आइए राज्य के शुभ-सन्देश के साथ आरम्भ करते हैं।

शुभ-सन्देश

प्रत्येक व्यक्ति जो कि नए नियम के साथ परिचित है यह जानता है कि इसका धर्मविज्ञान बहुत ज़्यादा जटिल है। परन्तु यदि यहाँ पर कोई एक ऐसा धर्मसिद्धान्त है जिसे हर कोई समझने की कोशिश कर सकता और उसे जीवन में लागू कर सकता है, तो उसका लेना देना सुसमाचार के साथ होगा। सच्चाई तो यह है कि, हम में से बहुत से सहमत होंगे कि यदि मसीह के शुभ-सन्देश को नहीं समझते हैं, तब नए नियम के धर्मविज्ञान के प्रत्येक तथ्य को समझने की हमारी क्षमता गंभीर रूप से सीमित है। परन्तु यह एक गंभीर प्रश्न को उठाता है। क्यों नए नियम के धर्मविज्ञान में सुसमाचार, या "शुभ-सन्देश" इतना ज़्यादा महत्वपूर्ण है? क्यों यह प्रगट है कि नए नियम में एक से ज़्यादा कई धर्मसिद्धान्त पाए जाते हैं? जैसा कि हम देखने वाले हैं कि, सुसमाचार नए नियम के धर्मविज्ञान में इतना ज़्यादा इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका सम्पर्क परमेश्वर के राज्य के ऊपर दी गई विस्तृत शिक्षा के साथ है। और परमेश्वर के राज्य के शुभ सन्देश का यह धर्मसिद्धान्त नए नियम के धर्मविज्ञान के प्रत्येक आयाम को आकार देता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम परमेश्वर के राज्य के शुभ-सन्देश को तीन चरणों में देखेंगे। सर्वप्रथम, हम शुभ सन्देश के अर्थ पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। दूसरा, हम परमेश्वर के राज्य की मूलभूत अवधारणा का पता लगाएंगे। और तीसरा, हम बाइबल आधारित इतिहास में इस विषय के विकसित होते हुए महत्व का पता लगाएंगे। आइए परमेश्वर के राज्य के शुभ-सन्देश के अर्थ के साथ आरम्भ करें।

अर्थ

> राज्य का सुसमाचार हमारे लिए राजा, अर्थात् प्रभु के द्वारा घोषित किए गए शुभ सन्देश के बारे में बोलने का एक तरीका है। विशेषकर, जब हम यीशु के बारे में नए नियम की घोषणाओं के बारे में सोचते हैं, तो यह वह उदघोषणा है कि "राजा आ पहुँचा है।" परन्तु इतना ही नहीं कि "राजा आ पहुँचा है," अपितु, यीशु के शासक होने, अर्थात् उसके प्रभुत्व के बारे में घोषणा की गई है, यह घोषणा इस आधार पर की गई है कि उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान ने उसके आधिपत्य की पुष्टि कर दी है। इसलिए, यह वह भाव है जिसमें शुभ-सन्देश एक ऐसी बात की घोषणा है जो कि पहले से घटित हो चुकी है। इसका निहितार्थ हमें कैसा जीवन व्यतीत करना है, के ऊपर है। परन्तु शुभ-सन्देश यह है कि यीशु आ गया है; उसने मृत्यु अपितु रहस्यमयी तरीके से मरने के द्वारा उसे हरा दिया है...इसमें अर्थ है, इसलिए, परमेश्वर ने हम पर इस शुभ-सन्देश की घोषणा ऐसे की है कि मानो यह पहले से ही घटित हो चुकी है। तथापि, यहाँ पर ऐसी प्रतिज्ञायें है जिनका अभी भी उस शुभ-सन्देश में पूरा होना बाकी है जिनका निहितार्थ अनन्तकाल के लिए है।
>
> — डॉ. रिचर्ड लिन्टस

लूका 4:43, यीशु ने अपनी सेवकाई के प्रयोजन को इस तरीके से सारांशित किया है:

> मुझे परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है (लूका 4:43)।

यद्यपि शब्द "सुसमाचार" या शुभ-सन्देश केवल लूका 4:43 में केवल एक ही बार प्रगट होता है, शुभ-सन्देश की अवधारणा वास्तव में इस वचन में दो बार इंगित की गई है। सुसमाचार शब्द यूनानी संज्ञा ईवांगलियोन से आता है, यह एक ऐसा शब्द है जो कि नए नियम के कम से कम 76 संदर्भों में आया है। शब्द ईवांगलियोन की व्युत्पत्ति इंगित करती है कि इसका अर्थ मानो "शुभ उदघोषणा" या एक "शुभ सन्देश" के जैसा है।

परन्तु इस आयत में ध्यान दें कि यीशु ने यह भी कहा है कि उसे "सुसमाचार को सुनाना अवश्य है।" घोषणा करना अर्थात् "सुनाने" के लिए यूनानी क्रिया ईवांगलिज़ो का अनुवाद किया है। यह शब्द यूनानी शब्दों के उसी परिवार से आता है जिसमें ईवांगलियोन है, और जिसका अर्थ "घोषणा करना या शुभ-सन्देश की उदघोषणा करना" है। यह नए नियम में लगभग 54 संदर्भों में आया है। इन शब्दों की आवृत्ति इस ओर इशारा करती है कि नए नियम के लेखकों के लिए यह अवधारणा कितनी महत्वपूर्ण है।

बहुत से इवैन्जेलिकल्स अर्थात् सुसमाचार सम्मतवादी आज शुभ सन्देश, या सुसमाचार के बारे में ऐसा सोचते हैं कि यह एक व्यक्ति के द्वारा मसीह में उद्धार प्राप्ति के लिए उठाने वाले कदमों की व्याख्या है। परन्तु ऐसा विचार यीशु के मन में नहीं था। जितना ज़्यादा हमें इस बात को साझा करने के लिए तैयार रहना चाहिए कि मसीह के अनुयायी कैसे बना जाए, उतना ज़्यादा पवित्रशास्त्र में शुभ-सन्देश का महत्व है। जैसा कि हम देखेंगे कि, किसी एक व्यक्ति विशेष या लोगों के समूह के लिए उद्धार की ओर संकेत करने की अपेक्षा, सुसमाचार परमेश्वर के राज्य के लिए विजय का एक शुभ-सन्देश है।

हमारे लिए इसके अर्थ को प्राप्त करने के लिए, हमें इस बात के लिए सजग होने की आवश्यकता है कि नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के यूनानी अनुवाद, सेप्तुआजिन्त अर्थात् सप्तति अनुवाद से "शुभ-सन्देश की घोषणा किये जाने" की अभिव्यक्त को रेखांकित किया है। सेप्तुआजिन्त उसी पहले उल्लेख की गई ईवांगलिज़ो क्रिया का उपयोग लगभग 20 संदर्भों में करता है। इस शब्द का अनुवाद इब्रानी क्रिया बाशार से किया गया है जिसका अर्थ "शुभ सन्देश की उदघोषणा या इसे लाने" के अर्थ में है। परन्तु 1 शमूएल 31:9 और 2 शमूएल 18:19 के संदर्भ ये संकेत करते हैं कि इन शब्दों का उपयोग राजाओं और राज्यों के संदर्भों के लिए उपयोग किया है, तो येलड़ाइयों में विजय के शुभ-सन्देशों की ओर संकेत करते हैं। यह अवलोकन अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि नए नियम में "शुभ-सन्देश" अक्सर परमेश्वर के राज्य से बहुत ज़्यादा सम्बद्ध किया गया है। वस्तुत: लूका 4:43 में यीशु ने कहा कि:

> मुझे परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है (लूका 4:43)।

हम वास्तव में निम्न पंक्तियों के साथ इस वाक्य का अनुवाद कर सकते हैं:

> मुझे परमेश्वर के राज्य का [की विजय के लिए] सुसमाचार सुनाना अवश्य है (लूका 4:43)।

जब परमेश्वर के राज्य के लिए विजय के शुभ-सन्देश के बारे में नया नियम बात करता है, तो यह एक विशेष तरह की विजय के बारे में संकेत करता है, जिसे हम बाद में इस अध्याय में देखेंगे। इस तरह से, यद्यपि यह सबसे पहले अजीब सा प्रतीत हो, तौभी हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि नए नियम में शुभ-सन्देश या सुसमाचार की मूलभूत अवधारणा परमेश्वर के राज्य "[की विजय के लिए]" का शुभ-सन्देश है।

यह देख लेने के बाद कि राज्य के शुभ-सन्देश का अर्थ परमेश्वर के राज्य के लिए विजय का सुसमाचार है, हम अब स्वयं परमेश्वर के राज्य की मूलभूत अवधारणा का पता लगाने के लिए तैयार हैं।

परमेश्वर का राज्य

परमेश्वर का राज्य विशेष रूप से नए नियम में कम से कम सात बार सुसमाचार के साथ जुड़ा हुआ है। हम "परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार" की अभिव्यक्ति को केवल थोड़े से भिन्न "राज्य के सुसमाचार" के रूप में मत्ती 4:23; 9:35 और 24:14; लूका 4:43; 8:1 और 16:16; और प्रेरितों के काम 8:12 में पाते हैं। यह आवृत्ति सुसमाचार– या विजय के सन्देश – को परमेश्वर के राज्य के साथ सम्पर्क करने के महत्व की ओर संकेत करती है। परन्तु इसे समझने के लिए, हमें सबसे पहले यह समझना होगा कि यीशु और उसके अनुयायियों ने जब परमेश्वर के राज्य के बारे में बोला तो उनके कहने का क्या अर्थ था ।

परमेश्वर का राज्य परमेश्वर के स्थान में परमेश्वर के लोगों के ऊपर परमेश्वर का शासन है। हम इसे बाइबल के आरम्भ में ही उत्पत्ति 1 और 2 में पाते हैं जहाँ पर परमेश्वर के लोग, आदम और हव्वा, परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में हैं, परमेश्वर शासक है, और वे परमेश्वर के स्थान अदन के बाग में रह रहे हैं। तब फिर, पाप के माध्यम से, उन्होंने सब कुछ गड़बड़ कर दिया, परन्तु परमेश्वर उसके राज्य को पुन:स्थापित करता है, सर्व प्रथम अब्राहम के द्वारा और तब फिर अब्राहम के वंशजों के द्वारा, और तब अन्त में इस्राएल के राष्ट्र का मिस्र में से पलायन करने के बाद मूसा के द्वारा। यह परमेश्वर के लोगों के ऊपर परमेश्वर का शासन है और अन्त में परमेश्वर के स्थान पर, जो कि कनान की भूमि है।

> परन्तु तब हम देखते हैं कि यह वक्र पथ यहाँ तक कि और ज़्यादा मसीह के आगमन से पूरा हो जाता है, और हम देखते हैं कि परमेश्वर उसके राजा, नियुक्त किए हुए राजा के रूप में मसीह के द्वारा शासन करता है। और परमेश्वर के लोग

> यहूदी और अन्यजातियों, सभी गोत्रों और भाषाओं और राष्ट्रों के लोगों से मिलकर बने हैं, परन्तु किसी भौगोलिक स्थान की अपेक्षा परमेश्वर का स्थान नया यरूशलेम, हमारा स्वर्गीय घर है... इस तरह से, नए नियम में हम देखते हैं कि परमेश्वर का राज्य अब मसीह का शासन प्रत्येक गोत्र, राष्ट्, और भाषा, पूरे संसार में बिखरे हुए और किसी एक विशेष निश्चित निर्धारित स्थान पर नहीं, परन्तु स्वर्ग, हमारे आत्मिक स्थान में स्थित है। परन्तु फिर, नया नियम हमें एक झलक भी देता है कि जब यीशु पुन: वापस आएगा तो परमेश्वर का राज्य कैसा होगा, और जबकि अब राज्य कुछ सीमा तक संसार से छिपा हुआ है, यह स्पष्ट रूप से उस समय दिखाई देगा जब मसीह का पुन: आगमन होगा; प्रत्येक घुटना झुक जाएगा, प्रत्येक जीभ अंगीकार करेगी कि यीशु मसीह ही प्रभु है, और परमेश्वर उसके राजा, मसीह के माध्यम से, सिद्धता के साथ अपने लोगों, जिन्हें वह जानता है और जो उसके स्वर्गीय नए यरूशलेम में उसे पिता कह कर पुकारते हैं, के ऊपर राज्य करेगा।
>
> — डॉ. कॉन्सटैन्टाइन आर. कैंपबेल

पवित्रशास्त्र परमेश्वर के राज्य को दो प्राथमिक तरीकों से संकेत करता है। एक तरफ तो, यह अक्सर परमेश्वर के राज्य को परमेश्वर की अटल सम्प्रभुता अर्थात् सर्वसत्ता या उसकी सृष्टि के ऊपर अपरिवर्तनीय शासन के शब्दों में बोलता है। यह साथ ही उसके खुलते हुए राज्य और उस तरीके की ओर जिसमें परमेश्वर ने उसके शासन को पूरे मानवीय इतिहास के दौरान प्रगट किया है, संकेत करता है। आइए सर्वप्रथम उसकी अटूट सम्प्रभुता को देखें।

अटल सम्प्रभुता

1 इतिहास 29:11 और 1 तीमुथियुस 6:15 जैसे प्रसंग परमेश्वर के राज्य के रूप में पूरी सृष्टि की बात करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने सदैव राज्य किया है और सदैव जो कुछ उसने निर्मित किया है उसके ऊपर राज्य करेगा। हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर की सम्प्रभुता के बारे में कि ये दो स्थानों पर कार्य कर रही है, दो स्तरों: दोनों अर्थात् स्वर्ग और पृथ्वी पर के रूप में बात करता है।

स्वर्ग के सम्बन्ध में, पवित्रशास्त्र परमेश्वर के शासन के बारे में 1 राजा 8:27 जैसे प्रसंगों में बात करता है। इस आयत में, सुलैमान ने स्पष्ट कर दिया है कि "स्वर्ग, वरन् ऊँचा स्वर्ग" भी ऐसा सृजा हुआ स्थान है जिसमें "[परमेश्वर] समा नहीं सकता है।" परन्तु उस पर भी परमेश्वर ने स्वयं को ही छोटा कर लिया और स्वयं को वहाँ पर अपनी सृष्टि के सामने प्रकट कर दिया।

यशायाह 6:1; 2 इतिहास 18:18; अय्यूब 1:6; भजन संहिता 82:1; और दानिय्येल 7:9-10; जैसे प्रसंगों और साथ ही नए नियम के लूका 22:30; और प्रकाशित वाक्य 4-6 तक जैसे प्रसंग ये संकेत देते हैं कि स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जो कि परमेश्वर का दृश्य संसार से ऊँचा ऐसा स्थान है जहाँ पर सभी तरह की गतिविधियाँ होती हैं। जब कि परमेश्वर का सिंहासन स्वर्ग में है, इसलिए वह सारे विवरणों को प्राप्त करता, प्रार्थनाओं को सुनता और अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करता, योजनाओं को बनाता और राजकीय आदेशों को निर्गत करता है। वह आत्मिक प्राणियों को इस पृथ्वी पर उसके मन के अनुसार कार्य करने के लिए निर्देशन देता है। कई अवसरों पर, वह यहाँ तक कि विशेष मानवीय प्राणियों को दर्शनों के माध्यम से उसके स्थान तक पहुँचने के लिए, और अपनी सेवा करने के लिए उन्हें अधिकृत करता है। उसके स्वर्गीय दरबार में वह आत्मिक प्राणियों, व्यक्तिगत् मानव प्राणियों और राष्ट्रों को उसके न्याय और दया के अनुसार दोषी और निर्दोष ठहराता और उन पर न्याय की घोषणा करता है। परन्तु परमेश्वर की स्वर्गीय

गतिविधि केवल स्वर्ग में उसके राज्य की ओर ही निर्देशित नहीं होती है। वह इसके साथ ही निचले स्थानों – इस पृथ्वी पर अपनी सृष्टि के ऊपर पर प्रभुतासम्पन्न है।

यद्यपि पवित्रशास्त्र परमेश्वर के राज्य के बारे में ऐसे बोलता है कि मानो यह दोनों अर्थात् स्वर्ग और पृथ्वी के ऊपर परमेश्वर की अटल संप्रभुता है, जब यीशु और नए नियम के लेखकों ने इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की ओर संकेत किया है, तो उस समय उनके मन में वह था जिसे हमने परमेश्वर का खुलता हुआ राज्य कह कर पुकारा है। और यही वह पार्थिव क्षेत्र है जिसमें हम यह देख सकते हैं कि कैसे परमेश्वर अपने राज्य को पूरे मानवीय इतिहास में प्रकट करता है।

खुलता हुआ राज्य

अब, जैसा कि हमने अभी अभी कहा, परमेश्वर ने सदैव अपनी सृष्टि को अपने नियन्त्रण में रखा है और सदैव रखेगा भी। परन्तु खुलते हुए परमेश्वर के राज्य का संकेत उस विशेष तरीके की ओर संकेत करना है जिसमें परमेश्वर पूरे इतिहास के दौरान अपनी सृष्टि के ऊपर अपनी प्रभुता को प्रकट करता, दर्शाता या प्रदर्शित करता है। इसलिए, जबकि पवित्रशास्त्र यह पुष्टि करता है कि कैसे परमेश्वर अपने शासन को स्वर्ग में प्रकाशित करता है, बाइबल के लेखकों ने अपने सबसे ज़्यादा ध्यान को इस विवरण को देने में केन्द्रित किया है कि कैसे परमेश्वर ने अपने आधिपत्य को इस पृथ्वी के ऊपर खोला है।

आरम्भ में, परमेश्वर ने अपने आधिपत्य को अदन के बाग में दृश्य रूप में प्रकट किया। उसने प्रथम मानव प्राणियों को उस पवित्र बाग में रखा और पूरे संसार के ऊपर अपने दृश्य राज्य का विस्तार करने के लिए उसे अधिकृत किया। उन्हें इस पृथ्वी पर भर जाना और इसे अपने अधिकार में परमेश्वर के राजकीय और याजकीय स्वरूपों के रूप में कर लेना था। परन्तु शैतान ने आदम और हव्वा को राज्य के विरोध में एक गंभीर झटका देने के लिए नेतृत्व प्रदान किया। इसकी प्रतिक्रिया में, परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को श्रापित कर दिया और मानव की गतिविधियों को बहुत ज़्यादा कठिन कर दिया। उसने मानवता को दो प्रतिद्वन्द्वी गुटों में विभाजित कर दिया: वे जिन्होंने उसकी सेवा की और वे जो निरन्तर परमेश्वर के विरूद्ध शैतान के विद्रोह में सम्मिलित होते जा रहे थे।

ये प्रतिद्वन्द्विता बाइबल के पूरे इतिहास में कई तरह के रूप में प्रकट हुई और इसने परमेश्वर के राज्य के लिए कई चुनौतियों को नेतृत्व प्रदान किया है। परन्तु पवित्रशास्त्र समय समय पर यह इंगित करता है कि अन्त में उन सभों पर जिन्होंने परमेश्वर का विरोध किया है, परमेश्वर की विजय होगी। उसका स्वरूप पृथ्वी को भरने में सफलता प्राप्त करेगा और इस पूरी पृथ्वी को अपने अधीन कर लेगा और परमेश्वर के राज्य के आश्चर्य प्रत्येक स्थान के ऊपर प्रकाशित होंगे। उस समय, सारे विद्रोहों के ऊपर परमेश्वर की विजय इतनी ज़्यादा महान् होगी कि प्रत्येक प्राणी उसे सृष्टि के राजा के रूप में स्वीकार करेगा। जैसे कि प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पियों 2:10-11 में विवरण दिया है कि:

> कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:10-11)।

इतिहास के लक्ष्य का महान् दर्शन वह विजय है जिसके बारे में यीशु और उसके अनुयायियों ने इसकी "परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार" के रूप में उदघोषणा की है।

अब क्योंकि हमने राज्य के सुसमाचार की मूलभूत अवधारणा को रेखांकित दोनों अर्थात् शुभ-सन्देश और परमेश्वर के राज्य के ऊपर देखने के द्वारा कर लिया है, इसलिए हमें परमेश्वर के राज्य के लिए विकसित होती हुई विशेषता की इस उदघोषणा की ओर मुड़ना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विकसित होती हुई विशेषता

राज्य के लिए शुभ-सन्देश की विजय इतनी ज़्यादा अच्छे तरीके से नए नियम के धर्मविज्ञान के कपड़े में बुनी हुई है कि यह नए नियम में हर किसी स्थान पर स्पष्ट या अस्पष्ट प्रकट होती है। जिस समय नए नियम को लिख दिया गया था, परमेश्वर के राज्य के लिए विजय की आशा की विशेषता इतनी ज़्यादा विकसित हो चुकी थी कि यह नए नियम के धर्मविज्ञान के प्रत्येक आयाम में व्यापक रूप से विद्यमान थी।

नए नियम के धर्मविज्ञान में परमेश्वर के राज्य की विकसित होती हुई विशेषता का पता हम कई तरीकों से लगा सकते हैं, परन्तु हमारे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हम मात्र दो पहलूओं के ऊपर ध्यान देंगे। सर्वप्रथम, हम इस्राएल की असफलता के अग्रणी विचारों की ओर ध्यान देंगे जो कि नए नियम के दिनों तक चलती आती है। और दूसरा, हम मसीह के आगमन से पहले राज्य के लिए इस्राएल की आशाओं की जाँच-पड़ताल करेंगे। आइए सर्वप्रथम हम इस्राएल की विफलताओं के बारे में विचार करें।

इस्राएल की विफलताएँ

पाप के द्वारा सृष्टि और मानव जाति के श्राप के अधीन आने के बाद में, परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वशंजों को राज्य के प्रेषण को पूरा करने के लिए चुना जिसे उसने सबसे पहले आदम और हव्वा को दिया था। परमेश्वर ने अब्राहम के परिवार को बढ़ाने की प्रतिज्ञा की। और उसने अब्राहम के वशंजों को प्रतिज्ञात् भूमि को परमेश्वर की आशीषों को इस पूरे संसार में विस्तारित करने के लिए आरम्भिक बिन्दु के रूप में दिया। मूसा और यहोशू के दिनों में, परमेश्वर ने इस्त्राएलियों के विशेषाधिकारों और दायित्वों को कनानियों के ऊपर विजय और उन शैतानिक आत्माओं के ऊपर विजय देकर विस्तारित किया जिनकी वे सेवा करते थे। बाद में, दाऊद और सुलैमान और इस्राएल और यहूदा के कुछ अन्य राजाओं ने परमेश्वर के राज्य को अन्य राष्ट्रों तक विस्तार करने के द्वारा उल्लेखनीय सफलताओं को प्राप्त किया था। सच्चाई तो यह है कि, सुलैमान के शासन के चरमोत्कर्ष पर, इस्राएल उस समय संसार के सबसे गौरवशाली साम्राज्यों में से एक था।

इन विशेषाधिकारों के होने के बाद भी, अब्राहम के वशंजों की प्रत्येक पीढ़ी ने इस या उस तरीके से परमेश्वर को विफलता ही दिखाई। परन्तु परमेश्वर ने धैर्य को दिखाया और उनके पापों के बावजूद भी उन्हें आगे बढ़ने के लिए सक्षम किया। दुर्भाग्य से, एक बार जब परमेश्वर के लोग स्वयं में उनके अपने राज्य के रूप में, एक राजकीय राजवंश और राजधानी के शहर में एक मन्दिर के साथ निर्मित हो गए, तब इस्राएल की विफलताएँ इतनी ज़्यादा ज्वलन्त अवहेलना बन गई कि परमेश्वर उनके विरूद्ध न्याय को ले आया। उसने अश्शूरियों और बाबुल के बुरे साम्राज्यों को युद्ध में इस्राएल के ऊपर विजय प्राप्त करने की बुलाहट दी। इन गंभीर पराजयों ने आखिरकार दाऊद के घराने को सिंहासन से हटा दिया, मन्दिर को नुकसान पहुँचाया, यरूशलेम को नाश कर दिया और बहुत से इस्राएलियों को निर्वासन में भेज दिया। प्रतिज्ञा की हुई भूमि उजाड़ कर दी गई। और पुराने नियम के अन्त में, परमेश्वर के राज्य की उपलब्धियाँ ऐसा जान पड़ता है कि सारी की सारी गायब हो गईं। नये नियम के आने के समय तक, इस्राएल में परमेश्वर के राज्य को अन्यजाति राष्ट्रों और झूठे शैतानिक देवताओं जिनकी वे 500 से ज़्यादा वर्षों से सेवा कर रहे थे, के द्वारा अत्याचार के अधीन दुख का सामना करना पड़ा।

दुर्भाग्यवश, आधुनिक मसीही विश्वासी इन सभी अनुभवों से बहुत ज़्यादा दूर हैं, यहाँ तक कि हममें से बहुत से लोग जागरूक नहीं हैं कि इस्राएल में कितनी ज़्यादा परमेश्वर के राज्य की पराजय ने नए नियम के धर्मविज्ञान को प्रभावित किया है। परन्तु, इस्राएल का अन्यजाति राष्ट्रों की अधीनता में होना पहली शताब्दी के यहूदियों के मनों में बहुत भारी पड़ा, जिसमें यीशु के अनुयायी भी सम्मिलित हैं। पहली शताब्दी के यहूदियों ने आश्चर्य जताया, कि क्या निर्वासन परमेश्वर के दृश्य राज्य का अन्त था? क्या परमेश्वर के राज्य के लिए कोई आशाभरा शुभ-सन्देश था? इस तरह के वातावरण ने नए नियम के लेखकों को नेतृत्व दिया कि वे परमेश्वर के राज्य का अन्त नहीं होने पर ज़ोर दें। सब कुछ खत्म नहीं हुआ था।

नासरत के यीशु ने शुभ-सन्देश दिया था कि निर्वासन समाप्त हो जाएगा। और मसीह में परमेश्वर का विजयी राज्य पूरे संसार में, इस्राएल की विफलताओं के बावजूद भी स्थापित होगा।

अब क्योंकि हमने इस्राएल की विफलताओं के द्वारा राज्य की विकसित होती हुई विशेषता को देख लिया है, इसलिए हम अब निर्वासन के बाद इस्राएल की परमेश्वर के राज्य के लिए आशाओं की ओर देखेंगे।

इस्राएल की आशाएँ

पुराने नियम में, परमेश्वर ने इस्राएल को उनकी आसन्न पराजय और निर्वासन की चेतावनी देने के लिए अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें की क्योंकि वे अविश्वासयोग्य लोग थे। परन्तु, उसने अपनी दया में, अपने भविष्यद्वक्ताओं को प्रेरित किया कि वे उन लोगों को महान् विजय की आशाओं के लिए पश्चाताप के लिए बुलाहट दें जो कि निर्वासन में जीवन व्यतीत कर रहे थे। ये भविष्यद्वाणियाँ जटिल थीं, परन्तु सामान्य अर्थों में, इस्राएल ने ऐसे समय के लिए आशा व्यक्त की जब परमेश्वर उसके शत्रुओं को हरा देगा और अपने लोगों को गौरवशाली, विश्वव्यापी राज्य की आशीषों में छुटकारा देगा।

हम इन आशाओं को पुराने नियम में कई स्थानों पर की गई भविष्यद्वाणी में देखते हैं, परन्तु समय की कमी के कारण, हम केवल यशायाह 52 में की गई जानी-पहचानी भविष्यद्वाणी में से दो आयतों के ऊपर ही ध्यान केन्द्रित करेंगे। सर्वप्रथम, यशायाह 52:7 में हम पढ़ते हैं कि:

> पहाड़ों पर उसके पांव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता है कि, "तेरा परमेश्वर राज्य करता है!" (यशायाह 52:7)।

यह आयत हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह स्पष्ट रूप से परमेश्वर के राज्य के लिए विजय के शुभ-सन्देश का उल्लेख करती है। यह साथ ही यशायाह 40:9 के सामान्तर है जहाँ पर यशायाह ने इस जैसे ही एक कथन को दिया है। इन दो प्रसंगों के विस्तृत संदर्भ ये संकेत करते हैं कि "शुभ-सन्देश" का इशारा परमेश्वर के राज्य के लिए अभूतपूर्व विजय की ओर है जो इस्राएल के निर्वासन की समाप्ति के समय आएगी। ये आशा से भरी हुई भविष्यद्वाणियाँ पहली शताब्दी में यहूदियों के विशाल बहुमत के धर्मवैज्ञानिक चिंतन में प्रतिबिम्बित हुई है। और यह आश्चर्य की बात नहीं है कि, ये साथ ही नए नियम के धर्मविज्ञान में भी दिखाई देती हैं।

> पुराने नियम की कहानी अपने पूर्ण रूप में निर्वासन के विषय के अधीन है। यह अतीत में अदन के बाग में आदम और हव्वा तक जाती है, और यह इस्राएल के अपने इतिहास में मात्र पुन: संक्षेप में दोहराई गई है। और इसलिए, घटनाओं का निराशाजनक रूप से दोहराया जाना, जो पुराने नियम की कहानियों में इतनी ज़्यादा बड़ी हो जाती है कि, यह स्वाभाविक ही निर्वासन के बाद किसी तरह की आशा की इच्छा को उत्पन्न करती है। इसलिए, हमारे पास निकट-समय में घटित होने वाली भविष्यद्वाणियों की बहुलता है, विशेषकर, यशायाह की पुस्तक में, यह कि परमेश्वर अपने लोगों को पुन:स्थापित अर्थात् बहाल करेगा, परन्तु जब आप इस घटना को अतीत में सृष्टि की कहानी के साथ जोड़ते हैं, तो आप स्वीकार करेंगे कि केवल भूमि की पुन:स्थापना आरम्भ में हुई मौलिक क्षति, या सृष्टि के आरम्भ के कुछ ही समय बाद के लिए पर्याप्त नहीं है...और इसलिए, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं में निकट-समय में होने वाले इस्राएल के छुटकारे की बात को प्राप्त करना अधिक स्वाभाविक है जो कि कदाचित् एक विशेष वरदान प्राप्त राजा के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> हाथों से होगा, परन्तु साथ ही परमेश्वर के लोगों के लिए अन्तिम राजकीय प्रतिनिधि के द्वारा अन्तिम छुटकारे को भी पाते हैं।
>
> — डॉ. सीएन मैक्डौन्ग

यशायाह 52:7 को निकटता से देखने में यह उन चार गुणों पर प्रकाश डालती है जो कि परमेश्वर के राज्य के लिए इस्राएल की आशा से सम्बन्धित है।

सर्वप्रथम, यशायाह ने कहा कि एक सन्देशवाहक "शुभ समाचार को लाएगा" और "कल्याण का शुभ समाचार" सिय्योन के लिए लाता है। दोनों ही वाक्यांश इब्रानी क्रिया बाशार का अनुवाद करते हैं जिसे सेप्तुआजिन्त ने ईवांगलिज़ो शब्द के साथ अनुवाद किया है। जैसा कि हमने पहले देखा था, यही शब्दावली नए नियम में भी मसीह में परमेश्वर के राज्य के लिए शुभ-सन्देश की विजय के लिए उपयोग की गई है।

दूसरा, हम यशायाह 52:7 को रोमियों 10:15 में उद्धृत किया हुआ देखते हैं। यहाँ पर, पौलुस संकेत देता है कि मसीही प्रचार यशायाह में भविष्यद्वाणी किए हुए सन्देशवाहक के द्वारा उदघोषणा किए हुए शुभ-सन्देश को इस्राएल के निर्वासन की समाप्ति के समय पूरा कर रहा है।

तीसरा, यशायाह ने भविष्यद्वाणी की कि शुभ-सन्देश "शान्ति" और "उद्धार" की उदघोषणा होगी। इफिसियों 6:15 में, पौलुस मसीही सुसमाचार को "शान्ति अर्थात् मेल का सुसमाचार" कह कर पुकारता है और इफिसियों 1:13 में वह "तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार" कह कर उल्लेख करता है।

और चौथा, इस आयत की अन्तिम पंक्ति शुभ-सन्देश को इस तरह से सारांशित करती है जब यह ऐसे घोषणा करती है कि, "तेरा परमेश्वर राज्य करता है!" यह सन्देश उस सुसमाचार के आधार को निर्मित करता है, जिसे यीशु और नए नियम के लेखकों ने निरन्तर "परमेश्वर के" - "राज्य का सुसमाचार" – या वह राज्य करता है, कह कर पुकारा है।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि कैसे यशायाह ने यशायाह 52:7 में इस्राएल की आशाओं के आगमन के बारे में भविष्यद्वाणियों को किया, आइए अब हम इसी अध्याय की आयत 10 को देखें। यहाँ पर, यशायाह ने विजय के दो पहलूओं की भविष्यद्वाणी की है जिसे इस्राएल देखने की चाहत रखता था। सर्वप्रथम, उसने परमेश्वर के शत्रुओं की पराजय का पूर्वानुमान लगाया।

परमेश्वर के शत्रुओं की पराजय यशायाह 52:10 के पहले आधे हिस्से में ही स्पष्ट रूप से प्रगट हो जाती है जहाँ पर यशायाह यह कहता है कि:

> यहोवा ने सारी जातियों के सामने अपनी पवित्र भुजा प्रगट की है (यशायाह 52:10)।

यहाँ पर हम देखते हैं कि परमेश्वर "अपनी पवित्र भुजा प्रगट" करेगा जिसका अर्थ है कि अपने शत्रुओं की युद्ध में पराजय के लिए उसकी भुजा का सामर्थ्यशाली होना।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, जो कोई भी पुराने नियम से परिचित है वह यह जानता है कि परमेश्वर ने अपने शत्रुओं को कई बार पराजित किया है। इसलिए, इस भविष्यद्वाणी ने ऐसा क्या किया कि इसने परमेश्वर की विजय को इतना ज़्यादा विशेष बना दिया है? इस आयत में, यशायाह ने भविष्यद्वाणी की है कि परमेश्वर अपने शत्रुओं को "सारी जातियों के सामने" पराजित करेगा। दूसरे शब्दों में, यशायाह ने भविष्यद्वाणी की कि इस्राएल के निर्वासन के बाद, परमेश्वर पूरी तरह से उसके शत्रुओं को प्रत्येक स्थान पर पराजित कर देगा। वह उनको सामर्थ्यहीन कर देगा, उन्हें पृथ्वी से हटा देगा, और उन्हें अनन्तकाल के न्याय के लिए भेज देगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दूसरा, यशायाह 52:10 का दूसरा हिस्सा हमें बताता है कि परमेश्वर की विजय परमेश्वर के लोगों को उसके राज्य की आशीषों के लिए छुटकारे का परिणाम बनेगी। आइए यशायाह 52:10 के इस हिस्से को सुनें?

> और पृथ्वी के दूर दूर देशों के सब लोग हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार निश्चय देख लेंगे (यशायाह 52:10)।

हम जानते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों को निरन्तर पुराने नियम में छुटकारा देता है। परन्तु इस छुटकारे में जिसकी बात यशायाह ने यहाँ भविष्यद्वाणी की है उसे "पृथ्वी के दूर दूर देश" देखेंगे। जैसे परमेश्वर के शत्रुओं की पराजय विश्वव्यापी होगी, उसका छुटकारा भी विश्वव्यापी और अन्तिम होगा। अन्त में, परमेश्वर अपने लोगों को अपने राज्य के आनन्द, प्रेम, धार्मिकता, शान्ति, सम्पन्नता और अपनी महिमामयी उपस्थिति में न समाप्त होने वाले हर्ष में लाकर छुटकारा देगा।

हम और अधिक निकटता से अपने अध्याय में बाद में परमेश्वर की इस विजय के दोनों पहलुओं को देखेंगे, परन्तु जैसा कि ये आयतें प्रगट करती हैं कि, आने वाले राज्य की भविष्यद्वाणियाँ सम्पूर्ण पुराने नियम में दिखाई देती हैं।

दुर्भाग्य से, लगभग 2000 वर्ष पहले, परम्परावादी मसीही धर्मविज्ञान ने नए नियम में राज्य की प्रमुखता को छिपा दिया है। कलीसिया के इतिहास के विभिन्न समयों पर, मसीहियों ने यह उचित रूप से विभिन्न विषयों की प्रतिक्रिया में विभिन्न तरह के धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के ऊपर ज़ोर दिया है। परन्तु हमें सदैव स्वयं को यह स्मरण दिलाना चाहिए कि जब नया नियम लिखा गया था, तब परमेश्वर के राज्य की पराजय यीशु के अनुयायियों के ऊपर अधिक भारी रूप से आन पड़ी थी। परमेश्वर का राज्य यीशु में अभूतपूर्व जीत को उत्पन्न कर देगा में विश्वास से ज़्यादा उनके लिए कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं था। और इसी कारण से, नए नियम का धर्मविज्ञान परमेश्वर के राज्य के शुभ-सन्देश की संरचना में निर्मित किया हुआ है।

अभी तक परमेश्वर के राज्य के ऊपर हमारे इस अध्याय में, हमने नए नियम के धर्मविज्ञान में राज्य के सुसमाचार के महत्वपूर्ण विषय का परिचय दिया। अब, हम अपने दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ेंगे कि: कैसे राज्य के आगमन ने नए नियम के धर्मविज्ञान को आकार दिया।

आगमन

हम सभों के पास ऐसे समय आए होंगे जब हमने यह विश्वास किया कि कुछ निश्चित बातें घटित होने वाली थीं। परन्तु जब समय आया, जो कुछ वास्तव में घटित हुआ वह जिसकी हमने कल्पना की थी उससे बहुत ही ज़्यादा भिन्न था। कई अर्थों में कुछ ऐसा ही नए नियम के लेखकों के साथ भी सत्य था। पहली शताब्दी में जीवन व्यतीत करते हुए यहूदियों के एक विशाल बहुमत की दृढ़ अपेक्षाएँ थीं कि परमेश्वर के राज्य की विजय कैसे आने वाली थी। परन्तु यीशु के आरम्भिक विश्वासियों ने धीरे धीरे यह सीख लिया था कि जैसे उन्होंने कल्पना की थी वैसा यह आने वाला नहीं था। इसलिए, कई अर्थों में, नए नियम का धर्मविज्ञान इस कार्य के लिए समर्पित है कि कैसे राज्य की विजय वास्तव में आने वाली थी।

यह समझने के लिए कि कैसे राज्य का आगमन नए नियम के धर्मविज्ञान को प्रभावित करता है, हम सर्वप्रथम परमेश्वर के राज्य के आगमन की अपेक्षाओं को स्पर्श करेंगे। तब हम नए नियम के उन दृष्टिकोणों को देखेंगे जिन्हें हम राज्य की त्रि-स्तरीय विजय कह कर पुकारेंगे। आइए सर्वप्रथम आने वाले राज्य की अपेक्षाओं के ऊपर ध्यान केन्द्रित करें।

अपेक्षाएँ

पहली शताब्दी ईस्वी. सन्., में, सभी यहूदी यहाँ तक कि अपने पूर्वजों की आस्था के प्रति प्रतिबद्धता रखने वाले थोड़ी मात्रा वाले भी परमेश्वर के राज्य के विजयी आगमन की लालसा रखते थे। उन सभों ने यही आशा की कि परमेश्वर उनके शत्रुओं को पराजित करेगा और अपने लोगों को अपने राज्य की आशीषों में छुटकारा देगा। यह बात यीशु के अनुयायियों के साथ भी सत्य थी। परन्तु वहाँ पर कुछ कैसे और कब परमेश्वर के राज्य के विजयी आगमन की अपेक्षा के प्रति उल्लेखनीय भिन्नताएं थीं।

एक तरफ तो, जब शास्त्रियों और इस्राएल के अन्य अगुवों ने परमेश्वर के राज्य की अन्तिम विजय के आगमन के बारे में शिक्षा दी, उन्होंने पुराने नियम की जानी-पहचानी शब्दावली जैसे "अन्तिम दिनों में" और "प्रभु के दिन" की ओर संकेत दिया। परन्तु साथ ही उन्होंने इतिहास के दो महान युगों के बारे में भी बोला। शास्त्रियों ने अक्सर पाप, दुख और मृत्यु के वर्तमान युग की ओर "इस या यह युग"– इब्रानी भाषा में औलाम हाजेह के रूप में और धार्मिकता, प्रेम, आनन्द और शान्ति के भविष्य के युग को जो निर्वासन के बाद "आने वाला युग" – इब्रानी भाषा में औलाम हाबा के रूप में आएगा संकेत दिया।

उन्होंने यह शिक्षा दी कि "यह युग" प्रतिज्ञात् भूमि से इस्राएल के निर्वासन के श्राप के निम्न स्तर पर पहुँच चुका है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि परमेश्वर इस युग के ऊपर भी प्रभुतासम्पन्न है, और समय समय पर उसने अपने राजत्व को उल्लेखनीय तरीकों से प्रकाशित किया या प्रदर्शित किया है। परन्तु पहली शताब्दी ईस्वी. सन., के आरम्भ तक, परमेश्वर के लोग हजारों वर्षों तक परमेश्वर के राज्य की आशीषों से दूर रखे गए थे और अत्याचार के अधीन थे। उनकी व्यापक अपेक्षा "आने वाला युग" की थी जिसमें परमेश्वर अपने शत्रुओं को पूरी तरह से इस पृथ्वी पर पराजित करेगा और इससे हटा देगा। और परमेश्वर के लोग सदैव के लिए परमेश्वर के विश्वव्यापी राज्य की अथाह आशीषों के लिए छुटकारा पाएंगे।

> बाइबल के साहित्य और साथ ही बाइबल के बारे में चर्चा में, हम कई बार इस या "यह युग" और "आने वाला युग" की शब्दावलियों को पाते या सामना करते हैं। इन शब्दों का क्या अर्थ दिया गया है वह यह है कि इस या "यह युग" वह युग है, वह अवधि है, वह काल है, जिसमें मानव प्राणी रहते हैं, वह युग जो पतन के बाद आरम्भ हुआ। यह पतित संसार में रहने वाला जीवन है। "आने वाला युग" जैसा कि पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा अपेक्षा की गई थी, वह समय था जिसमें परमेश्वर कुछ अर्थ में स्वर्ग को पुन:स्थापित करेगा; वहाँ पर नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी होगी, और पत्थर का मानवीय हृदय दूर कर दिया जाएगा, और हम सभी पूरी सिद्धता के साथ उसका अनुसरण करेंगे और परमेश्वर की इच्छा को पूरा करेंगे। वहाँ मानव प्राणियों में फिर दुबारा किसी तरह की कोई हिंसा नहीं होगी; और यहाँ तक कि पशुओं के राज्य में भी किसी तरह की कोई हिंसा नहीं होगी।
>
> — डॉ. इक्हार्ट जे. स्कैनाबैल

पहली शताब्दी में, विभिन्न यहूदी सम्प्रदायों में इतिहास के "इस युग" से "आने वाले युग में" स्थानान्तरित होने से पहले क्या होता, के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण थे। परन्तु बहुत से सम्प्रदाय सहमत थे कि पराजय के इस युग से परमेश्वर के विजयी राज्य की ओर स्थानान्तरण एक विनाशकारी युद्ध के माध्यम से प्रगट होगा। उन्होंने विश्वास किया कि मसीह, जो कि दाऊद के सिंहासन का वंश है, स्वर्ग के स्वर्गदूतों और परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों, परमेश्वर के मानवीय और आत्मिक शत्रुओं के ऊपर विजय प्रदान करने के लिए नेतृत्व देगा।

यह विश्वास की परमेश्वर केवल मानवीय शत्रुओं को ही पराजित करेगा, परन्तु साथ ही आत्मिक शत्रुओं को भी का पवित्रशास्त्र के सम्पूर्ण पुराने नियम में समर्थन प्राप्त है। उदाहरण के लिए, निर्गमन 12:12 में, परमेश्वर ने न केवल मिस्रियों को पराजित करने के बारे में बोला, अपितु मिस्रियों के देवताओं को भी। 1 शमूएल 5:1-12 में परमेश्वर ने पलिश्तियों के साथ युद्ध किया और उनके झूठे देवता, दागोन को भी पराजित कर दिया। इसलिए ही यशायाह ने बाबुल की पराजय को बाबुल के देवताओं के नाश होने के साथ जोड़ा है।

पुराने नियम में हाग्गै 2:6-9; जकर्याह 9-12 और यहेजकेल 38-39 जैसे प्रसंगों को यहूदी प्रकाशनात्मक अर्थात् भविष्य-सूचक साहित्य में एक बड़े लौकिक युद्ध की भविष्यद्वाणियों के रूप में व्याख्या की गई है जिसमें मसीह परमेश्वर की सेना का नेतृत्व राष्ट्रों और उन बुरी आत्माओं के विरूद्ध विजय में करेगा जो उनके ऊपर शासन करती हैं। इस तरह से, मसीह परमेश्वर के सारे शत्रुओं को पराजित कर देगा और परमेश्वर के सारे लोगों को उसके महिमामयी, विश्वव्यापी राज्य में लाकर छुटकारा देगा।

दूसरी तरफ, जितना ज़्यादा ये यहूदी दृष्टिकोण व्यापक थे, उतना ही ज़्यादा यीशु के अनुयायियों ने परमेश्वर के राज्य के लिए विजय को विभिन्न तरीकों से पूर्वानुमानित करना आरम्भ कर दिया। उनके समकालीनों के बहुमत की तरह ही, नए नियम के लेखकों ने यह विश्वास किया कि इतिहास दो महान् युगों में विभाजित किया हुआ है। और वे इस बात पर सहमत थे कि मसीह परमेश्वर के मानवीय और आत्मिक शत्रुओं को पराजित कर देगा और परमेश्वर के छुटकारा पाए हुए लोगों को "इस युग" से "आने वाले युग" की आशीषों में पहुँचाएगा। परन्तु यीशु के अनुयायियों ने यह विश्वास करना आरम्भ किया कि इस युग से आने वाले युग में स्थानान्तरण इस तरीके से घटित होगा कि यह उस दृष्टिकोण के विपरीत होगा जिसमें उनके दिनों में अधिकांश यहूदी विश्वास करते थे।

पहले स्थान पर, अधिकांश यहूदियों के विपरीत, नए नियम के लेखकों ने यह विश्वास किया कि यीशु ही प्रतिज्ञात् मसीह, दाऊद का चुना हुआ पुत्र था, जो परमेश्वर के राज्य के लिए अन्तिम विश्वव्यापी विजय को लेकर आएगा। और यीशु को मसीह मानते हुए इस प्रतिबद्धता ने जो कुछ उन्होंने नए नियम में लिखा उसे गहनता से आकार दिया।

हम यीशु के मसीह शासक होने के राजकीय पदों के प्रति इस भक्ति को देख सकते हैं जिसे नया नियम देता है। उदाहरण के लिए, नया नियम यीशु को राजकीय पद "मसीह" के साथ लगभग 529 बार संदर्भित करता है। यूनानी शब्द ख्रिस्टोस इब्रानी शब्द मिस्हाक का अनुवाद करता है जिसमें से हम हमारे शब्द मसीह को प्राप्त करते हैं। मूलत:, ये शब्द स्वयं में सामान्य तौर पर किसी के "अभिषिक्त" होने का अर्थ रखते हैं। पुराने नियम के समयों में, भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा विशेषकर इस्राएल में अभिषिक्त पद थे। परन्तु नए नियम के समय के आने तक, "अभिषिक्त" या "मसीह" लगभग दाऊद के घराने के महान् राजा का पर्याय बन गया था जो कि आने वाले युग के स्थानान्तरण को लाएगा।

एक दूसरा राजकीय पद यीशु को नए नियम में दिया गया है जो कि "परमेश्वर का पुत्र" है। यह अभिव्यक्ति या कुछ इसके जैसी भिन्न जैसे "पुत्र" या "परमप्रधान का पुत्र" लगभग 118 बार नए नियम में प्रगट होती है। यह शब्दावली इंगित करती है कि यीशु ही इस्राएल का वास्तविक राजा है। सुनिए यूहन्ना 1:49 में क्या कहा गया है जहाँ पर नतनएल यीशु को ऐसा कहता है कि:

> **तू परमेश्वर का पुत्र है; तू इस्राएल का महाराजा है (यूहन्ना 1:49)।**

और जैसे पतरस मत्ती 16:16 में कहता है कि जब वह यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार करता है कि:

> **तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है (मत्ती 16:16)।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यह अभिव्यक्ति यीशु के लिए तीसरे राजकीय पद के जैसे ही है जो कि: "दाऊद का पुत्र है।" हम इसे मत्ती, मरकुस और लूका में कम से कम 20 बार यीशु के संदर्भ में देखते हैं कि वही परमेश्वर की ओर से दाऊद के सिंहासन के लिए ठहराया हुआ उचित उत्तराधिकारी है।

उदाहरण के लिए, लूका 1:32-33 में, स्वर्गदूत जिब्राएल मरियम से यीशु के जन्म के समय यह उदघोषणा करता है कि:

> [यीशु] महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा। और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा (लूका 1:32-33)।

यहाँ जिब्राएल ने यीशु को राजकीय पद "परमप्रधान का पुत्र" के साथ बोला। उसने फिर विवरण दिया कि यीशु उसके "पिता दाऊद के सिंहासन" पर विराजमान होगा। लूका ने यह विवरण भी दिया है कि यीशु "सदा के लिए....राज्य करेगा [और] उसके राज्य का अन्त न होगा।" परमप्रधान का पुत्र होने के नाते, यीशु वह व्यक्ति है जो कि परमेश्वर के राज्य के लिए अन्तिम, न-समाप्त होने वाली विजय को लेकर आएगा।

यह सारा प्रसंग नए नियम के धर्मविज्ञान की एक महत्वपूर्ण शिक्षा की ओर संकेत करता है: यीशु ही मसीह है जो कि इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को उसकी पूर्णता में लेकर आएगा।

दूसरे स्थान पर, यीशु के आरम्भिक अनुयायियों ने यह विश्वास किया कि वह इस युग से आने वाले युग में एक स्थानान्तरण अर्थात् परिवर्तन को इस तरीके से लाएगा कि जिसे उन्होंने और अन्यों ने अपेक्षा नहीं की होगी।

सुनिए मत्ती 13:31-32 में उस तरीके को जिसमें यीशु ने परमेश्वर के राज्य की इस अपेक्षा के परिवर्तन को प्रकाशित किया है:

> उस ने [भीड़] से कहा... "स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया। वह सब बीजों से छोटा तो है पर जब बढ़ जाता है तब सब साग पात से बड़ा होता है; और ऐसा पेड़ हो जाता है, कि आकाश के पक्षी आकर उस की डालियों पर बसेरा करते हैं (मत्ती 13:31-32)।

इस दृष्टान्त में, यीशु ने परमेश्वर के विजयी राज्य के बारे में सिखाया जो कि इतने छोटे से आरम्भ होगा जैसे कि "राई का बीज" होता है, जो समय के साथ वृद्धि करता है, और तब वह अपनी अन्तिम पराकाष्ठा तक पहुँच जाता है।

आधुनिक धर्मविज्ञान अक्सर यीशु के परमेश्वर के मसीह आधारित आने वाले राज्य के इस दृष्टिकोण को "उदघाटित युगान्त विज्ञान" कह कर पुकारते हैं। यह वाक्यांश उस अवधारणा की ओर संकेत करता है जिसमें मसीह ने अपने कार्य को इस पृथ्वी पर पहले से ही प्रकट कर दिया है, परन्तु इसमें अन्तिम विजय अभी आना बाकी है। वह साथ ही "पहले से आ पहुँचा, परन्तु अभी नहीं" के बारे में भी बोलते हैं। दूसरे शब्दों में परमेश्वर के राज्य की विजय पहले से हो चुकी है, परन्तु इस पर यह अपनी परिपूर्णता में अभी नहीं है । परमेश्वर के आने वाले राज्य की विजय का यह दृष्टिकोण नए नियम के धर्मविज्ञान में असँख्य अन्तर्दृष्टियों को प्रदान करता है।

> परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित बड़े प्रश्नों में से एक यह है जब यीशु ने परमेश्वर के राज्य के होने की उदघोषणा की, कि यह वर्तमान की एक वास्तविकता है? तो क्या यह शब्दों या कार्य में आ गया है, या क्या यह अभी भी भविष्य का एक तत्व

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> है? ठीक है, विद्वान "परमेश्वर के उदघाटित राज्य" के बारे में बात करते हैं। "उदघाटित" का अर्थ है कि यह दोनों अर्थात् वर्तमान और भविष्य में है। यीशु ने राज्य की उदघोषणा की। राज्य का आगमन शब्दों और कार्यों के माध्यम से हो रहा था, विशेषकर, क्रूस के ऊपर उसकी मृत्यु और उसके पुनरूत्थान के माध्यम से। इस तरह से, राज्य का उदघाटन् हो गया, परन्तु इसकी समाप्ति अभी नहीं हुई है। जब यह पूरी तरह से समाप्ति पर आएगा, तब यह पृथ्वी पर पूरी तरह से आ जाएगा, तब हम अपने महिमामयी शरीरों को प्राप्त करेंगे, हम परमेश्वर के साथ अनन्तकाल के सम्बन्धों में प्रवेश करेंगे। इस तरह, हम समयों के मध्य में वर्तमान दिन में, राज्य के उदघाटन के मध्य में, इसकी समाप्ति में रहते हैं। हम अभी भी इन शरीरों में रहते हैं; हम अभी भी इस पतित संसार में रहते हैं, तौभी राज्य आ पहुँचा है क्योंकि मसीह पिता के दाहिने हाथ विराजमान होकर राज्य कर रहा है। वह हमारे हृदयों में भी राज्य कर रहा है। और इस तरह से राज्य आ पहुँचा है। यह "पहले से आ पहुँचा" है, परन्तु यह अभी भी भविष्य में है। यह साथ ही "इस पर भी अभी नहीं" आया है।
>
> — डॉ. मार्क एल. स्ट्रोस

विस्तृत रूप में, यह नए नियम के परमेश्वर के आने वाले राज्य के त्रि-स्तरीय विजय के दृष्टिकोण के बारे में सोचने में सहायता करता है। सर्वप्रथम, उदघाटन के समय, परमेश्वर ने राज्य की विजय को यीशु के जीवन, मृत्यु, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के द्वारा, और प्रथम शताब्दी में अपने प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की मूलभूत सेवकाइयों के द्वारा आरम्भ की। इसके बाद, इसकी निरन्तरता में, यीशु ने परमेश्वर के राज्य की विजय को स्वर्ग में अपने सिंहासन से प्रगति की। और यीशु अपने राज्य की निरन्तर वृद्धि कलीसिया के पूरे इतिहास के माध्यम से करता रहेगा। यीशु राज्य की समाप्ति को उस समय लेकर आएगा जब वह महिमा में पुन: वापस आएगा। यह परमेश्वर के राज्य की अन्तिम विजय होगी जब सारी बुराई का नाश हो जाएगा और परमेश्वर का महिमामयी राज्य इस पूरे संसार में चारों ओर विस्तारित हो जाएगा।

जैसा कि नए नियम के लेखकों ने स्वयं को विभिन्न तरह के धर्मवैज्ञानिक विषयों की व्याख्या के लिए समर्पित किया, उन्होंने ऐसा विस्तृत अर्थों में यीशु के मसीह आधारित कार्य को इन तीन चरणों के संदर्भ में किया।

जैसा कि हमने पहले देख लिया है कि, राज्य के आगमन ने पहली शताब्दी के यीशु के अनुयायियों की अपेक्षाओं को परिवर्तित कर दिया था। अब, आइए नए नियम के धर्मविज्ञान में परमेश्वर के राज्य की त्रि-स्तरीय विजय के महत्वपूर्ण स्थान को देखें।

त्रि-स्तरीय विजय

यह तथ्य की परमेश्वर के राज्य की विजय यीशु के मसीह आधारित कार्य के उदघाटन, निरन्तरता और समाप्ति में आती है, ने आरम्भ की कलीसिया में सभी तरह के प्रश्नों को उत्पन्न कर दिया। यीशु ने पहले से क्या कुछ को स्थापित कर लिया था? उसने कलीसिया के इतिहास में क्या स्थापित किया? वह अपने आगमन के समय पर क्या करेगा? इस तरह के प्रश्न प्रथम शताब्दी में बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण थे, जिन्होंने नए नियम के धर्मविज्ञान को गहनता से आकार दिया। नए नियम के लेखकों ने इस तथ्य के ऊपर अपने ध्यान को दिया कि परमेश्वर के शत्रुओं की पराजय और परमेश्वर के लोगों का छुटकारा मसीह के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रथम आगमन में ही आरम्भ हो चुका था। ये घटनाएँ कलीसिया के पूरे इतिहास में चलती रहेंगी, और अन्त में मसीह के दूसरे विजयी आगमन के समय अपनी पूर्णता में पहुँच जाएगी।

समय ही हमें उन कुछ तरीकों की ओर संकेत करने के लिए अनुमति प्रदान करेगा जिसमें नए नियम के इस त्रि-स्तरीय धर्मविज्ञान ने आकार लिया है, परन्तु यह हमें दो दिशाओं में देखने के लिए सहायता प्रदान करेगा। सर्वप्रथम, हम यह ध्यान देंगे कि कैसे नया नियम परमेश्वर के शत्रुओं की पराजय को उसके राज्य में तीन चरणों में व्याख्या करता है। तब, हम परमेश्वर के लोगों के छुटकारे के बारे में नए नियम की शिक्षाओं को भी तीन चरणों में जाँच-पड़ताल करेंगे। आइए सर्वप्रथम परमेश्वर के शत्रुओं की पराजय को देखें।

पराजय

अविश्वासी यहूदियों का यह मत था कि मसीह दोनों अर्थात् परमेश्वर के मानवीय और आत्मिक शत्रुओं को पराजित कर देगा। नए नियम के लेखकों ने भी यही विश्वास किया। परन्तु उन्होंने साथ ही यह भी समझा कि यीशु इसे इस तरीके से करेगा कि जो उसके राज्य के प्रत्येक चरण के लिए उपयुक्त होगा।

नए नियम के धर्मविज्ञान ने यह ज़ोर दिया कि यीशु की रणनीति राज्य के उदघाटन के प्रति द्वि-स्तरीय थी। एक तरफ, उसने परमेश्वर के आत्मिक शत्रुओं के ऊपर परमेश्वर के न्याय को प्रकट किया। अपनी पूरी सेवकाई के दौरान, यीशु ने बुरी आत्माओं को उनकी सामर्थ्य के स्थानों से बाहर निकालते हुए उन्हें सामर्थ्यहीन कर दिया। परन्तु दूसरी तरफ, उसने परमेश्वर की दया को परमेश्वर के मानवीय शत्रुओं के ऊपर विस्तारित किया। इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि, मसीह की दया ने लोगों को उनके लिए कई तरह की आशीषों की ओर नेतृत्व प्रदान किया, परन्तु साथ ही बुरी आत्माओं की पराजय में उन्हें उनके मानवीय सेवकों से हटाते हुए विस्तारित किया।

मत्ती 12:28-29 में, यीशु स्वयं इस रणनीति की व्याख्या करता है जब वह यह कहता है कि :

> यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है... या कैसे कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहिले उस बलवन्त को न बान्ध ले? और तब वह उसका घर लूट लेगा (मत्ती 12:28-29)।

यीशु आया और उसने दुष्टआत्माओं को बान्ध लिया या "बलवन्त को बान्ध" [लिया] ताकि उसके "घर को लूट" ले। दूसरे शब्दों में, यीशु ने दुष्टआत्माओं को बाहर कर दिया और उन्हें स्वतन्त्र कर दिया जो दुष्टआत्माओं के अधीन थे।

हम इस द्वि-स्तरीय रणनीति को यूहन्ना 12:31-32 जैसे स्थानों में भी देख सकते हैं जहाँ पर यीशु ने ऐसा कहा कि:

> अब इस जगत का न्याय होता है, अब इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा। और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खीचूँगा (यूहन्ना 12:31-32)।

एक बार फिर से, राज्य के उदघाटन के समय, यीशु ने परोक्ष में ही बुरी आत्माओं के ऊपर आक्रमण किया या "इस संसार के राजकुमार" अर्थात् "शैतान" के ऊपर। उसने उसे बाहर भगा दिया और उसे सामर्थ्यहीन कर दिया। परन्तु शैतान के विरूद्ध इस आक्रमण के साथ ही, यीशु ने मानवता को उद्धार प्रदान किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> कई बार लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि, किस तरह से ख्रिष्तुस विक्टर, अर्थात् विजयी मसीह का यह दृश्य, मसीह के उस विचार, जिसमें वह हमारे पापों के लिए मारा गया, एक प्रतिस्थापित प्रायश्चित के रूप में, के साथ सम्बद्ध या उससे जुड़ा हुआ है?...यूहन्ना के सुसमाचार में, यीशु ने जब तीसरी बार बोला कि मनुष्य का पुत्र ऊँचे पर चढ़ाया जाएगा जैसे जंगल में सर्प को उँचे उठाया गया था – यह यूहन्ना 12 में मिलता है – तो वह इस उँचे उठाए जाने को विशेष रूप से इस वाक्य के साथ जोड़ता है कि "अब इस संसार का सरदार निकाल दिया जाता है।" इस तरह से, यीशु श्रापित सर्प के स्थान को ले लेता है, वह मृत्यु को मृत्यु के भीतर से नाश करने के लिए उसमें चला जाता है। इस तरह से उसका ख्रिष्टुस विक्टर का प्रथम कार्य मृत्यु को उसके भीतर से नाश करने के लिए क्रूस के ऊपर ऊँचे पर उठाए जाने का है।
>
> — रेव्ह. माईकल जे. गाल्डो

परमेश्वर के आत्मिक शत्रुओं की पराजय इब्रानियों 2:14-15 जैसे प्रसंगों में मसीह के उदघाटन के कार्य के लिए बहुत ज़्यादा महत्वपूर्ण है, जिसे कि नए नियम के लेखकों ने मसीह की क्रूस के ऊपर प्रायश्चित की जाने वाली मृत्यु के बारे में उसी द्वि-स्तरीय रणनीति के शब्दों में लिखा है। उन्होंने, उसकी मृत्यु के माध्यम से, यह स्पष्ट कर दिया है कि यीशु ने मानवीय प्राणियों के ऊपर शैतान की शक्ति को तोड़ दिया है। और मानवता के पापों के लिए प्रायश्चित करने के द्वारा, यीशु ने उन लोगों को स्वतन्त्र कर दिया है जो पाप और मृत्यु की दासता में थे।

ये विचार कुलुस्सियों 2:15 में स्पष्ट प्रगट होते हैं जहाँ पर प्रेरित पौलुस ने ऐसे लिखा है कि:

> उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतारकर [मसीह ने] उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय- जयकार की ध्वनि सुनाई (कुलुस्सियों 2:15)।

शैतानिक शक्तियों और अधिकारियों ने उनकी प्रधानता के स्थान को उस समय खो दिया जब यीशु ने अपने लोगों को पाप के राज्य से क्रूस के ऊपर मरने के द्वारा छुटकारा दे दिया।

इस आलोक में, यह हमें आश्चर्यचकित नहीं करना चाहिए कि इफिसियों 4:8 में मसीह का पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण का विवरण शैतान के मानवीय सेवकों के लूटने के रूप में दिया हुआ है:

> जब वह ऊँचे पर चढ़ा, और बन्दियों को बाँध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए (इफिसियों 4:8)।

जैसा कि यह प्रसंग उल्लेख करता है कि, जब पुरूष और स्त्री मसीह में विश्वास करते हैं, तो यह मानो ऐसा होता है कि मसीह उन्हें शैतान के राज्य से लूट के रूप में प्राप्त करता है।

परमेश्वर का आत्मिक विरोधियों की पराजय की ये रणनीति प्रेरितों के काम की पुस्तक में मसीह के प्रेरितों के उदघाटन के कार्य में भी प्रगट होती है। यीशु के उदाहरण का अनुकरण करते हुए, प्रेरितों ने निरन्तर दुष्टआत्माओं को बाहर निकाला जब वे अन्यजातियों के राष्ट्रों को सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे और शैतान के कई मानवीय सेवकों को उनके स्थान से हटा दिया।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि, जब हम मसीह के राज्य की निरन्तरता को कलीसिया के पूरे इतिहास में ध्यान देते हैं, तो हम पाते हैं कि मसीह के अनुयायियों को उस रणनीति का अनुकरण करना चाहिए जिसे यीशु ने उदघाटन के समय उपयोग किया था। परमेश्वर के मानवीय शत्रुओं के ऊपर विजय

प्राप्त करने की अपेक्षा, हमें अपने ध्यान को उन बुरी आत्माओं के ऊपर केन्द्रित करना चाहिए जो कि परमेश्वर के रास्तों का विरोध करती हैं।

यद्यपि कई आधुनिक मसीही विश्वासी इसको स्वीकार करने में विफल हो जाते हैं, कि नए नियम में राज्य का धर्मविज्ञान निरन्तर हमें स्मरण दिलाता है कि यीशु की कलीसिया लोगों के साथ नहीं, अपितु शैतान और उसकी अन्य बुरी आत्माओं के साथ युद्ध कर रही है। और परमेश्वर के विरूद्ध इन आत्मिक शत्रुओं के साथ युद्ध करना हमारा दायित्व है।

इसी लिए, इफिसियों 6:11-12 जैसे प्रसंगों में, नए नियम हमारी कठिनाइयों और संघर्षों को बुरी आत्माओं के साथ हमारे संघर्ष के रूप में व्याख्या करते हैं। यहाँ पर हम ऐसा पढ़ते हैं कि:

> परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं (इफिसियों 6:11-12)।

अधिकांश समय आधुनिक मसीही विश्वासी उनके जीवनों में चल रहे संघर्ष को केवल मानव प्राणियों के संघर्ष के रूप में सोचते हैं। परन्तु यहाँ हम देखते हैं कि कलीसिया जिस संघर्ष का सामना कर रही है वह "प्रधानों," "अधिकारियों," "हाकिमों," और "दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।" और परमेश्वर के सारे हथियारों को बान्धने से हम इन आत्मिक प्राणियों को जो परमेश्वर के राज्य का विरोध करते हैं, को सामर्थ्यहीन करने में सक्षम हो जाते हैं।

सम्पूर्ण कलीसियाई इतिहास में मसीह के राज्य के आयाम के रूप में आत्मिक मल्लयुद्ध के ऊपर यह प्रसंग स्वयं में असामान्य तरीके से ज़ोर नहीं देता है। निरन्तर संघर्ष जिसका हम शैतान और अन्य बुरी आत्माओं के साथ अनुभव करते हैं कई अन्य प्रसंगों में भी मिलते हैं जैसे इफिसियों 4:27; 1 तीमुथियुस 3:7;2 तीमुथियुस 2:26; याकूब 4:7; 1 पतरस 5:8; 1 यूहन्ना 3:8; और यहूदा 9 आदि। परन्तु उसी समय, जब हम 2 कुरिन्थियों 5:20 को पढ़ते हैं, तो हमें चाहिए कि हम परमेश्वर की दया को उसके मानवीय शत्रुओं के ऊपर विस्तारित करें।

> इसलिए, हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा विनती कर रहा है। हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो (2 कुरिन्थियों 5:20)।

पौलुस के परमेश्वर के राज्य के लिए उसके प्रतिनिधि होने के लिए "मसीह के राजदूत" वाले उदाहरण का अनुसरण करते हुए, हम निरन्तर परमेश्वर के आत्मिक शत्रुओं को पराजित परमेश्वर और उसके मानवीय शत्रुओं के मध्य मेल-मिलाप की लालसा करते हुए चले जाते हैं।

नए नियम का धर्मविज्ञान परमेश्वर के शत्रुओं की पराजय को मसीह के राज्य के शिरो-बिन्दु अर्थात् पराकाष्ठा के साथ भी सम्बद्ध करता है। यह ध्यान देना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि, तथापि, वहाँ पर शिरो-बिन्दु के समय यीशु की रणनीति में एक नाटकीय परिवर्तन प्रगट होगा। जब मसीह का पुन: आगमन होगा, तो वह और ज़्यादा परमेश्वर की दया को उसके मानवीय शत्रुओं के ऊपर विस्तारित नहीं करेगा। इसकी अपेक्षा, मसीह परमेश्वर के आत्मिक और मानवीय शत्रुओं के विरूद्ध युद्ध में नेतृत्व उनकी पूर्ण पराजय, उनका पृथ्वी पर सफाया होने के लिए, और उनके ऊपर अनन्तकाल के न्याय के लिए प्रदान करेगा।

सुनिए उस तरीके को जिसमें प्रकाशितवाक्य 19:13-15 में शिरो-बिन्दु के समय परमेश्वर के मानवीय शत्रुओं की पराजय का विवरण दिया गया है:

> उसका नाम परमेश्वर का वचन है। और स्वर्ग की सेना उसके पीछे पीछे है... जाति जाति को मारने के लिये उसके मुँह से एक चोखी तलवार निकलती है (प्रकाशितवाक्य 19:13-15)।

इसी तरह से, प्रकाशितवाक्य 20:10 मसीह के महिमामयी पुन:आगमन को बुरी आत्माओं और शैतान के विरूद्ध अन्तिम न्याय के समय के रूप में वर्णित करता है:

> और उन का भरमानेवाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में, जिसमें वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा, और वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 20:10)।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, हमने केवल संक्षेप में इन विषयों को सारांशित किया है। परन्तु हम इन उदाहरणों से देख सकते हैं कि नए नियम के लेखकों ने यह अनुभव किया कि राज्य की विजय के इस तथ्य को बारी बारी से स्पष्ट करना अति आवश्यक है। उन्होंने बुरी आत्माओं के विरूद्ध इस आक्रमण की प्राथमिकता के ऊपर ज़ोर दिया और परमेश्वर की मानवीय शत्रुओं के प्रति दोनों अर्थात् राज्य के उदघाटन और निरन्तरता के दौरान दया के ऊपर ज़ोर दिया। परन्तु उन्होंने इस ओर भी संकेत दिया कि, अन्त में, जब मसीह पुन: वापस आएगा तो दोनों अर्थात् मानवीय और आत्मिक शत्रु परमेश्वर के अनन्तकाल के न्याय के अधीन आ जाएंगे। इन बातों पर ज़ोर यह पुष्टि करता है कि परमेश्वर के शत्रुओं की पराजय नए नियम में राज्य के धर्मविज्ञान में एक महत्वपूर्ण गुण है।

> परमेश्वर के राज्य का आरम्भ हो चुका है, वह यहाँ पर है, परन्तु यह अभी भी इसकी समाप्ति की ओर बढ़ रहा है, यह तब तक बढ़ता रहेगा जब तक कि यह अपने शिरो-बिन्दु तक नहीं पहुँच जाता। इस तरह, किस तरीके से, तब, यह प्रश्न पूछा जाए कि, क्या यीशु पहले से ही उसके शत्रुओं के ऊपर विजयी है? ठीक है, सर्वप्रथम, सबसे महत्वपूर्ण विजय स्वयं क्रूस में है जिसके कारण वह शैतान को हराता है... इस अर्थ में, महत्वपूर्ण विजय को लड़ा जा चुका और जीता जा चुका है। और इसी लिए, उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 12 में, सन्तजन भाइयों के ऊपर दोष लगाने वाले के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, कि वे मेम्ने के लहू से उसके ऊपर विजय को प्राप्त किए हैं। उन्होंने शैतान पर विजय पाई है – जिसे रूपक में प्रकाशितवाक्य 12 में वर्णित किया गया है – उन्होंने मेम्ने के लहू के द्वारा उसके ऊपर विजय प्राप्त किया है। और, इसलिए, यह युद्ध पहले से ही जीत लिया गया है। परन्तु, जैसे हिटलर ने विश्व युद्ध द्वितीय के अन्त में, जब वह यह देख सकता था कि युद्ध तो खत्म हो चुका है, इस पर भी उसने इसे नहीं छोड़ा । वह गुस्से से भरा हुआ था कि उसका समय थोड़ा ही रह गया था। यही कुछ शैतान के लिए भी कहा गया है। इस लिए, शैतान अब पहले से ज्यादा उग्र है, और प्रत्येक समय जब सुसमाचार प्रगति करता है, और अधिक लोग परिवर्तित होते हैं, धार्मिकता व्यक्तिगत् लोगों के जीवनों में स्थापित होती है, स्थानीय कलीसिया में, किसी भी तरह की उपसंस्कृति में, तो यह पहले से ही शैतान और उन सभों के लिए जो अन्धकार को प्रेम करते हैं, एक आगे बढ़ती हुई पराजय है। और अन्तिम विजय की ओर अन्तिम वक्र पथ उस समय होगा जब इस संसार के राज्य हमारे परमेश्वर और उसके मसीह का राज्य बन जाएगा, और वह इसके ऊपर सदैव के लिए राज्य करेगा...यह वह बिन्दु है जब वक्र पथ अपने स्थान पर रख दिया गया है ताकि जैसे फिलिप्पियों 2 में लिखा हुआ है, प्रत्येक घुटना टिकेगा, प्रत्येक जीभ अंगीकार करेगी कि यीशु ही प्रभु है, और मूलभूत विजय को प्राप्त कर लिया

> जाएगा। इसे कुछ अर्थों में अभी भी पूरा किया जाना बाकी है। इसे हमारे स्वयं के जीवनों में पूरा किया जाना है जो कि आनन्दपूर्ण तरीके से, आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा, अपने घुटने टेकते हुए करते हैं। परन्तु प्रत्येक घुटना उस अन्तिम दिन उसके आगे झुक जाएगा।
>
> — डॉ. डी. के. कारसन

अब क्योंकि हमने परमेश्वर के राज्य की त्रि-स्तरीय विजय को देख लिया है कि यह कैसे परमेश्वर के शत्रुओं की पराजय को स्वयं में सम्मिलित करती है, हमें अब उस ओर संकेत करना चाहिए कि कैसे परमेश्वर के लोगों का छुटकारा भी नए नियम के धर्मविज्ञान में मुख्य भूमिका को अदा करता है।

छुटकारा

यदि यहाँ पर राज्य के उदघाटन से सम्बन्धित कोई एक पहलू है तो वह अधिकांश पाठकों की समझ में आ जाता है, वह राज्य की आशीषों में परमेश्वर के लोगों का छुटकारा है। उदाहरण के लिए, कई कारणों में से एक कि क्यों सुसमाचार इतना ज्यादा ध्यान यीशु के आश्चर्यकर्मों के ऊपर केन्द्रित करता है क्योंकि ये आश्चर्यकर्म उस राज्य की आशीषों को प्रस्तुत करते हैं जिसे यीशु इस पृथ्वी पर लेकर आया। यीशु के आश्चर्यकर्म उस राज्य की आशीषों का अस्थाई रूप से पूर्वस्वादन था जिनका परमेश्वर के लोग आने वाले युग में सदैव के लिए आनन्द करेंगे। इससे भी परे, यीशु के गरीबों, और आवश्यकता में पड़े हुओं, और वे जो अन्यों के हाथों सताए जाते हैं, के लिए सामाजिक न्याय ने भी राज्य की महत्वपूर्ण आशीषों का प्रतिनिधित्व किया।

यीशु और उसके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा किए गए ये आश्चर्यकर्म और सामाजिक न्याय असाधारण आशीषें थीं। परन्तु परमेश्वर के राज्य के उदघाटन में सबसे बड़ी आशीष अनन्तकाल का उद्धार था जिसे मसीह ने उन सभों को दिया जिन्होंने उसके ऊपर विश्वास किया।

इसलिए ही कुलुस्सियों 1:13-14 में पौलुस मसीह में उद्धार को प्राप्त किया जाना एक राज्य से दूसरे राज्य में छुटकारे को प्राप्त करने के रूप में वर्णित करता है।

> उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है (कुलुस्सियों 1:13-14)।

राज्य की आशीषों में छुटकारे का विषय भी हमारी यह समझने में सहायता करता है कि क्यों नया नियम पवित्र आत्मा के कार्य पर इतना ज्यादा ज़ोर देता है। प्रेरितों की सेवकाई के समय के अन्त होने पर, मसीह के अनुयायियों के ऊपर पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना संसार में आने वाली आशीषों में एक थी जिसे देने की प्रतिज्ञा प्रत्येक विश्वासी से की गई थी। जैसा कि हम 2 कुरिन्थियों 1:21-22 में पढ़ते हैं कि:

> जिसने हमारा अभिषेक किया, जिस ने हम पर छाप भी कर दी है, और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया (2 कुरिन्थियों 1:21-22)

ये प्रसंग बड़ी निकटता से इफिसियों 1:14 के सामान्तर है। दोनों प्रसंग संकेत देते हैं कि पवित्र आत्मा मसीह की "हमारे स्वामित्व के ऊपर छाप है।" उसने "बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया" है। दूसरे शब्दों में, जो पवित्र आत्मा, परमेश्वर की सामर्थ्य हमारे आज के जीवनों में है, वह मसीह के अनुयायी को मिलने वाली अथाह मिरास की पहली किश्त है जिसे तब प्राप्त किया जाएगा जब मसीह अपनी महिमा में वापस आएगा।

नया नियम परमेश्वर के लोगों के छुटकारे को मसीह के राज्य की निरन्तरता के दौरान भी प्राप्त किए जाने को सम्बोधित करता है। कलीसिया के आगे बढ़ते हुए जीवन में, नए नियम के लेखकों ने मसीह के अनुयायियों को यह स्मरण दिलाते हुए उत्साहित किया कि उन्हें कैसे परमेश्वर ने पहले से ही उसके राज्य की आशीषों में छुटकारा दे दिया है। नए नियम का धर्मविज्ञान यह ज़ोर देता है कि, न केवल परमेश्वर ने हमें हमारे पापों के न्याय से बचाया है, अपितु परमेश्वर निरन्तर अपनी कलीसिया को पवित्र आत्मा के वरदान को भी अनुदान में देता है। उदाहरण के लिए 1 कुरिन्थियों 4:20 को पढ़ें:

> क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं परन्तु सामर्थ्य में है (1 कुरिन्थियों 4:20)।

यहाँ पर जैसा कई अन्य स्थानों पर है, जिस "सामर्थ्य" का ध्यान पौलुस के मन है वह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य थी।

परमेश्वर का आत्मा उसके लोगों के लिए परमेश्वर की आशीषों की आश्चर्यजनक वास्तविकता थी जिसे हम दिन प्रतिदिन अनुभव करते हैं। वह हमें पवित्र करता है, हमारे जीवनों में अपने फलों को उत्पन्न करता है, हमें आनन्द से भरता है, और हमें अपनी सामर्थ्य से शत्रुओं के विरूद्ध सशक्त करता है। इस तथ्य के बावजूद भी मसीह की कलीसिया की कई शाखाएँ आज विश्वासियों के जीवनों में पवित्र आत्मा की भूमिका के मूल्य को कम कर देती हैं, वह मसीह के राज्य की निरन्तरता के दौरान हमारी महान् आशीष है।

नए नियम का धर्मविज्ञान मसीह के अनुयायियों को इसलिए भी उत्साहित करता है जो उसके राज्य की निरन्तरता के दौरान रहते हैं, कि वह अपनी आशाओं को यहाँ तक कि आने वाले राज्य की महान् आशीषों की ओर टिकाए रखें।

इब्रानियों 12:28 मसीह के अनुयायियों को राज्य की आशीषों के आलोक में विश्वासयोग्य बने रहने के लिए बुलाहट देते हैं जो कि अभी आगे आने वाली हैं:

> इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं, कृतज्ञ हों, और भक्ति, और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना करें जिससे वह प्रसन्न होता है (इब्रानियों 12:28)।

और याकूब 2:5 में हम ऐसा पढ़ते हैं कि:

> क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी और उस राज्य के अधिकारी हों जिस की प्रतिज्ञा उस ने उनसे की है जो उस से प्रेम रखते हैं? (इब्रानियों 12:28)।

याकूब ने कलीसिया को बुलाहट दी कि वह उस पक्षपात को करना बन्द कर दे जो वह धनी लोगों के लिए दिखा रहे थे क्योंकि ये धनी ही नहीं हैं जो कि राज्य को प्राप्त करेंगे। इसकी अपेक्षा, वे जो "विश्वास में धनी" और "वे जो उसको प्रेम करते" हैं वे उस "राज्य जिसकी प्रतिज्ञा उसने की है, को प्राप्त करेंगे।"

यीशु ने राज्य की आशीषों में अपने लोगों को तब छुटकारा दिया जब उसने राज्य का उदघाटन किया। और उसके राज्य की आशीषें कलीसिया के जीवन के पूरे इतिहास में निरन्तर चल रही हैं। परन्तु पवित्रशास्त्र शिक्षा देता है कि परमेश्वर के लोगों का परमेश्वर के राज्य की आशीषों में पूर्ण छुटकारा तब तक पूरा नहीं होगा जब तक राज्य अन्तिम शिरो-बिन्दु तक नहीं पहुँच जाता। परमेश्वर के लोग राज्य की सभी प्रतिज्ञात् आशीषों का पूर्ण अनुभव करेंगे। जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 11:15 में पढ़ते हैं कि:

> जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा (प्रकाशितवाक्य 11:15)।

जब मसीह पुन: वापस आएगा, तब संसार का राज्य पूरी तरह से विजयी परमेश्वर के राज्य से प्रतिस्थापित कर दिया जाएगा। और प्रकाशितवाक्य 5:9-10 को सुनिए जहाँ पर स्वर्गीय प्राणी मसीह की प्रशंसा में गीत गा रहे हैं:

> कि तू इस पुस्तक के लेने और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तूने वध होकर अपने लोहू से हर एक कुल और भाषा और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है। और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं। (प्रकाशितवाक्य 5:9-10)।

शिरो-बिन्दु के समय, परमेश्वर के लोगों का छुटकारा "याजकों [का] एक राज्य" होने और "वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे," में परिवर्तित हो जाएगा।

> जब हम यीशु के पुन: आगमन और उसकी अन्तिम विजय के बारे में सोचते हैं, तो हम मात्र सामान्य शब्दों में नहीं सोचना चाहते हैं कि यीशु अपने शत्रुओं को विस्मित कर रहा है, जिसे फ्रैंच लोग फोर्स मेज़ुर कह कर पुकारते हैं, जो कि मात्र शक्ति का प्रदर्शन है। प्रकाशितवाक्य में यह यीशु के मुँह से तलवार निकलने की बात करता है, और यह निश्चय ही वचन की तलवार है, न्याय की तलवार है, अन्तिम न्याय किसी भी चीज के प्रदर्शन से बढ़कर है। और इसी तरह से सन्तों का, विशेषकर नए नियम के संदर्भ में, निर्दोष ठहराया जाना मुख्य विषयों में से एक है। वे यीशु के ऊपर विश्वास करने लगे और अपने गालों को दूसरों के आगे करने लगे और अपने शत्रुओं को प्रेम करने लगे और इन सब अन्य बातों को करने लगे जबकि संसार कहता है कि यह पूर्ण मूर्खता है। इसलिए, न्याय के समय, सब बातों को स्पष्ट कर दिया जाएगा, सारी बातें पारदर्शी बन जाएंगी; सत्य सामने आ जाएगा और यह सन्तों के लिए शुभ-सन्देश होगा और उन दुष्टों के लिए बुरा समाचार जिनकी दुष्टता यीशु और उसके सन्देश का विरोध करने के लिए बनी हुई है।
>
> — डॉ. सीएन मैक्डौन्ग

जैसा कि हमने देखा है कि, नए नियम के लेखकों ने परमेश्वर के शत्रुओं की पराजय और यीशु के मसीह आधारित कार्य के प्रत्येक चरण पर राज्य की आशीषों में उसके लोगों के छुटकारे के ऊपर अपने ध्यान को केन्द्रित किया है। जबकि ये तत्व प्रथम दृष्टि में आपस में असम्बन्धित दिखाई देते हैं, वे इकट्ठे कर दिए गए और नए नियम के धर्मविज्ञान के ऊपर ज़ोर देते हैं क्योंकि वे एक महत्वपूर्ण विषय का प्रतिनिधित्व करते हैं जो कि: मसीह में परमेश्वर के राज्य का विजयी आगमन है।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने नए नियम के धर्मविज्ञान में परमेश्वर के राज्य की महत्वपूर्णता को देखा है। छोटी या निम्न शिक्षा होने की अपेक्षा, जैसा कि नए नियम के लेखकों ने शिक्षा दी कि परमेश्वर का राज्य

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रत्येक के हृदय में आकार लेता है। हमने यह पता लगाया है कि कैसे यह राज्य के सुसमाचार के साथ सत्य था। और हमने यह भी देखा है कि कैसे नए नियम का धर्मविज्ञान राज्य के आगमन में उसका उदघाटन, निरन्तरता और शिरो-बिन्दु अर्थात् समाप्ति तक पहुँचना मसीह के राज्य में होगा।

जैसा कि हमने देखा, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि नए नियम का विश्वास परमेश्वर के राज्य के बारे में है। नए नियम का धर्मविज्ञान परमेश्वर के राज्य के लिए विजय के सुसमाचार और कैसे यह विजय प्राप्त की जाएगी, कैसे यह आ रही है, और मसीह का राज्य कैसे तीन चरणों में आएगा, के ऊपर ज़ोर देता है। राज्य की ये मूलभूत अवधारणायें नए नियम के सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से कुछ को प्रस्तुत करती हैं। इन्हें ध्यान में रखना नए नियम के धर्मविज्ञान के प्रति हमारी समझ को बहुत अधिक बढ़ाएगा। और हम नए नियम की शिक्षाओं के नए महत्व को प्राप्त कर पाएंगे। बिना किसी प्रश्न के, मसीह में परमेश्वर के राज्य का विषय नए नियम के धर्मविज्ञान के प्रत्येक पहलू को अपने अधीन करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।